ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६५
दिनांक- मंगलवार, १५ सितम्बर, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३३.० एवं २६.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८६ प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ३.३ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन २.३ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ३०.८ एवं दोपहर में ३४.० डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में ५.६ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१६-२० सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १६-२० सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। अगले २४-४८ घंटों में मैदानी तथा तराई के जिलों में ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। उसके बाद के दिनों में अधिकतर स्थानों पर मौसम शुष्क रह सकता है। हलांकि एक-दो स्थानों पर हल्की या छिट-पुट वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३२ से ३४ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २५-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पुरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई खड़ी फसलों फसलों में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव सावधानी पूर्वक आसमान साफ रहने पर हीं करें। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियोंवाली फसलों में आवश्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी, तालाब या बाढ़ के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे वचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल १०० मि०ली० खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- धान की फसल में ब्राउन प्लांट होपर कीट की निगराणी करे। यह मच्छरनुमा कीट पौधा की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी-कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड / ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी या फेनोबुकार्ब ५० ई.सी. /१०० मी. ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- बरसात के दिनों में परती खेतो एवं खेतो के मेड़ पर अत्यधिक दुब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमें कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट ४१ : एस०एल० का १०-१५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवश्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करे।
- भिंडी, उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस रोग की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की शिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियाँ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोगग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- उचॉस जमीन में सितम्बर अरहर की बुआई करें। इसके लिए पूसा-९ एवं शरद प्रभेद अनुशंसित है। बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। जून-जुलाई में बोयी गई अरहर की फसल में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में जैसे- पूसा अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काशी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोवॉल की रोपाई करे। अगात फुल गोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। पत्तागोभी की अगात किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुशंसित है। नर्सरी से खरपतवार समय-समय पर निकालते रहें ताकि स्वस्थ पौध मिल सकें।

आज का अधिकतम तापमानः ३२.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.४ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः २६.९ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.३ डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी